‘[illegible]-₹[illegible]’ [illegible] [illegible]

निराला को प्रौढ़तम लम्बी कविताओं म से एक '[illegible]-स[illegible]' [illegible] [illegible]|

इस कविता म कवि के व्यक्तिगत जीवन को त्रासदी युवा पुत्री के असमय [illegible]त[illegible] [illegible]व के रूप म अभिव्यक्ति पाती है|

इस सन्दभ म डॉ. रामस्वरूप चतुवदी का एक कथन उल्लेखनीय है- "यह कवि को इकलौती बेटी को मृत्यु पर लिखा गया शोक काव्य है, [illegible]न्[illegible] [illegible]| [illegible]ो [illegible] [illegible]स[illegible]ों को अंकित किया है| [illegible], श्रृं[illegible] [illegible]-बीच म करुणा को अन्तवर्ती धारा [illegible] प्र[illegible] [illegible]|"

[illegible]म[illegible] [illegible]न्न[illegible] [illegible]ि[illegible] सरोज को मृत्यु [illegible]स[illegible] [illegible]|[illegible]त[illegible] [illegible]त्त [illegible]ग[illegible] हृदय को ले जाते ह [illegible] [illegible]त[illegible] [illegible] '[illegible]श्व[illegible] [illegible]' [illegible]ो [illegible] [illegible]ि[illegible]प्रेक्ष[illegible] [illegible]-

[illegible]ि[illegible] [illegible] [illegible] प्र[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]-[illegible]न्[illegible]-[illegible];

[illegible],[illegible] [illegible] [illegible]क[illegible] [illegible]रु[illegible]

जनक से जन्म को विदा अरुण!

[illegible],[illegible], [illegible] रू[illegible]-[illegible],

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]श्व[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]ष्ट[illegible]ध[illegible] |

किन्तु अगले ही क्षण [illegible] व्य[illegible] , [illegible] प्र[illegible] -

[illegible]

[illegible]!

[illegible]

हारता रहा म स्वाथ समर |

[illegible] क्ष[illegible] -

[illegible]

[illegible] क्षे[illegible], [illegible]-[illegible]|

निराला को स्मृतियाँ पीछे लौटती [illegible]- [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] |इस स्मरण के साथ ही रचनात्मक संघष भी जुड़ा [illegible]| [illegible] को वह व्यथ व्यस्तता जुड़ी है जो रचनात्मक जीवन को साथकता प्रदान [illegible] –

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]-[illegible]-[illegible]

सरोज को सुखमय देखने को आकांक्षा और अपनी रचनात्मकता को एक साथक समग्र जीवन देने को आकांक्षा – [illegible] आकांक्षा के अंग ह| [illegible] संघष करते ह|

□□□ क्र□ □ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □|□□□□□□□□ □□□□, □त्री□ □□ रू□ □□ □□□□ □□□□ो □ष्ट□ □□□□ □|इस सौंदय स्मृति का अथ कुछ और □□ □□ □□□□ □□, जब प्रिय के रूप को स्मृति पुत्री के रूप को स्मृति म □क्र□□□ □□□□□□□□□ □|□ □□ □ि□□ □□□ □□□□□ □□ प्र□□ □□ नाटकोय दृश्य पर लाता है -

□□ □□□ □□ □ि□व्य □□□

□□□□□ □□ीं □□□□□-□□□

□□□ □□□ □प्रे□ □□- स□□

माँ को मधुरिमा व्यंजना □□

‘□□□□□□□’ □ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □क्र□□ ि□□□□□ □|ि□न□□ □□ □□□□□ □ □□□□□□ □□ □□त्र□ □□□□ □ि□□ □□□□□ □□ □□, □□□□ □□□□ □□□□□□□ रू□ विशिष्ट मनःस्थितियों के बीच एक दूसरे म □क्र□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ |

□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□,□□□□□□□ □□□□ □त्री□ □□ □□□□□ □□□न□□ □ □न□कुब्जों को नीचता, स□□□□□□□, □ि□द्र□□ □ि□ □□ □□त्र□ □□□□ □,□□□□□□□□□□ □□□त्री□ □□□□□□□ □ □□□ □से□□□□ीं □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□–

□□□न□□ब□-□□-□□□□□

□□□□ □त्त□ □ □□ □□

इनके कर कन्या अथ, □□

□□□□□ □□□ □□□□धीरे ट्रैजिक निष्पत्ति को और बढ़ती है| □□ □से□□□ □ □सा लगता है को इससे भिन्न उसको स्थिति नहों है| □□□□□ □□□□ □ ‘□□□□- स□□’ □□ □□□□ □श□ □□□से□□ □□□□ □,□□□ □□□ ‘□□□ □□

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]' के अतिरिक्त कुछ भी कहने म असमथ [illegible]| [illegible] अभिव्यक्ति और क्या हो सकती है| [illegible] [illegible]-[illegible]-[illegible] [illegible]–

[illegible]

[illegible], [illegible]

[illegible] , [illegible]

[illegible] भ्रष्ट [illegible]

[illegible], [illegible]

[illegible], [illegible] |

इस प्रकार अपनी रचनात्मकता के विनाश और तपण [illegible] [illegible] प्र[illegible] [illegible]| [illegible] – मृत्यु का एहसास या तनाव पूरी कथा म व्याप्त [illegible], [illegible] अभिव्यक्ति '[illegible]-स[illegible]' म अपने चरमतम रूप म मिलती है |